मुझे साथी मिल गया

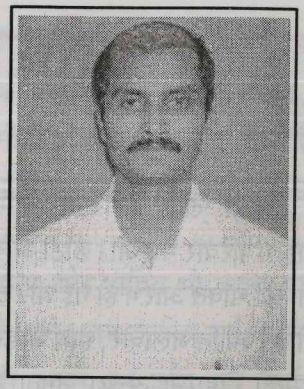

• बीजू जॉन जेकब, जबलपुर

बाबा का बनने के बाद, बाबा के साथ का अनुभव लगभग हर बच्चे को होता है। साथ का एक विशेष अनुभव सबके साथ बाँटना चाहता हूँ –

मुझे सरकारी नौकरी करते बीस साल पूरे हो गये थे और आगे प्रमोशन हेतु चार महीनों की इंटरमीडियट ट्रेनिंग करनी अनिवार्य थी। नवंबर 2009 में मुझे, पूना में ट्रेनिंग लेने के लिए जबलपुर से कार्यमुक्त किया गया। पूरे भारत से 25 साथियों के साथ ट्रेनिंग शुरू हुई। ट्रेनिंग बहुत कठिन थी। Calculus, Dynamic Meteorology, Statistics, Physics, Physical Meteorology जैसे विषयों पर सुबह 9.30 से शाम 6 बजे तक लैक्चर होते थे।

मुझे छोड़कर लगभग सभी एम.एस.सी. या बी.एस.सी. स्नातक थे। मैं बी.कॉम. स्नातक था इसलिए मेरे लिए औरों से ज्यादा कठिन थी ट्रेनिंग। जैसे-जैसे कोर्स आगे बढ़ता गया, सभी तनाव महसूस करने लगे। घर से दूरी एवं उम्र के हिसाब से 40 पार – इस कारण लगभग सभी कठिनाई महसूस कर रहे थे। तीन कर्मचारियों की तबीयत खराब हो गई और ट्रेनिंग अधूरी छोड़ उन्हें वापस जाना पड़ा।

मैं जबलपुर से पुरानी मुरलियों का सेट लेकर गया था। रोज़ अमृतवेले बाबा से योग लगाता और बाबा को कहता, इस अनजान शहर में आप ही मेरे साथी हो। मुझे दिन-भर ऐसा लगता कि क्लास में बाबा मेरे साथ हैं। मुरली भी ऐसी होती कि उस दिन जो होने वाला होता, वह बाबा मुझे मुरली द्वारा बता देते, उदाहरण के लिए, एक दिन अमृतवेले मुरली में पढ़ा कि दुखी-अशान्त आत्माओं को शान्ति का दान देना है। उसी दिन सुबह 5.30 बजे मेरे दरवाजे पर आहट हुई और एक साथी कर्मचारी खड़ा मिला, बोला, मुझे बहुत अशान्ति हो रही है, योग सिखाओ। मैंने बाबा से सीखे हुए योग अनुसार उसे सिखाया। उसे शान्ति का अनुभव हुआ।

खान-पान भी एक चुनौती थी। दोपहर को कैंटीन से सादी दाल और चावल मिल जाता था। सुबह-शाम फल खा लेता था। मध्यावधि परीक्षा दिसंबर में संपन्न हुई तो मुझे सबसे अधिक अंक मिले। सभी साथियों को बहुत उत्सुकता थी कि बी.कॉम. होते हुए भी विज्ञान के विषयों में टॉप कैसे कर सका। मैंने कहा, यह राजयोग का कमाल है। फिर तो मुझसे राजयोग सीखने के लिए कई कर्मचारी तैयार हो गये। दो लोगों को स्थानीय गीता पाठशाला में कोर्स पूरा करवाया। कई लोगों को क्लास में एवं अपने छात्रावास में योग का अनुभव कराया। उनमें से कुछ लोगों के परीक्षा में अच्छे नंबर आने से योग के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण बढ़ा। ईश्वरीय विश्व विद्यालय का परिचय सभी छात्रों और कुछ टीचरों को भी मिला।

अकेले में मैं बाबा को दोस्त बनाकर बातें करता। कुछ बातों के लिए जिद्द भी करता था, कहता था, बाबा, परीक्षा हॉल में आपको मेरे साथ रहना है। इंटरव्यू में भी बाबा को हक के साथ बोला, आपको साथ में चलना है। मुझे बाबा का सच्चा साथ मिला और अकेलापन बिल्कुल भी नहीं लगा।

मार्च 2010 में ट्रेनिंग सफलतापूर्वक पूरी हुई तो दिल में बाबा के लिए प्रेम और धन्यवाद के भाव महसूस कर रहा था। ट्रेनिंग के इन चार महीनों में बाबा के साथ का जो अनुभव हुआ, वह आजीवन याद रहेगा। ❖